गायत्रीतीर्थ
शान्तिकुञ्ज
youth.awgp.org

माँ की संस्कारशाला

सप्ताह-4

मानवीय मूल्य

बहादुरी

Online पढ़ने हेतु QR कोड स्कैन करें।

शान्तिकुञ्ज-हरिद्वार

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं
भर्गोदेवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्

उस प्राणस्वरूप, दुःखनाशक, सुखस्वरूप, श्रेष्ठ, तेजस्वी,
पापनाशक, देवस्वरूप, परमात्मा को हम अपने अंतःकरण में धारण करें।
वह परमात्मा हमारी बुद्धि को सन्मार्ग पर प्रेरित करे।

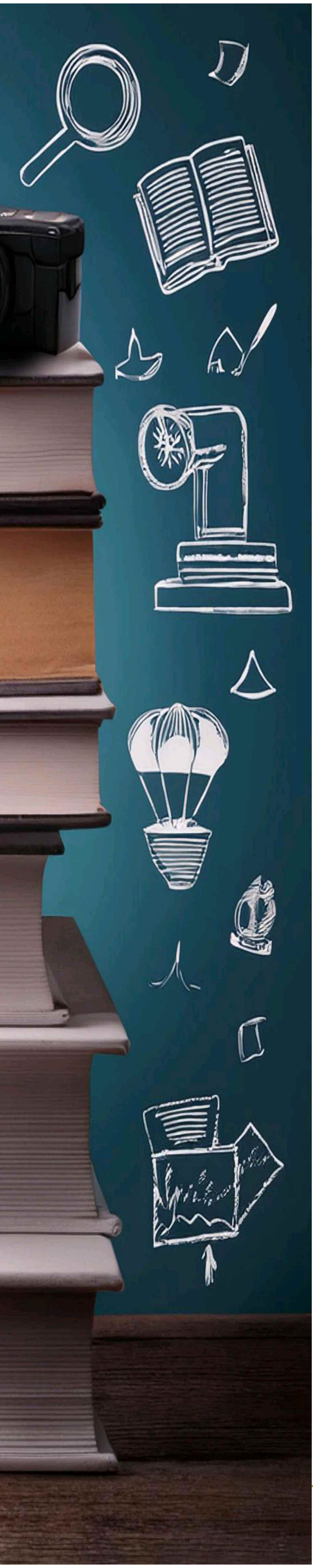

विषय सूची - चतुर्थ सप्ताह

मानवीय मूल्य- बहादुरी 84

माँ से निवेदन 85

बच्चों को डराया न करें 86

प्रथम दिवस :
कहानी : भालू की बहादुरी 88

द्वितीय दिवस :
कहानी : वीर बालक 90

तृतीय दिवस :
कहानी : साहसी बालिका 91

चतुर्थ दिवस :
कहानी : घनश्याम की वीरता 93

बच्चों की समस्याओं के मनोवैज्ञानिक एवं व्यावहारिक समाधान :
बच्चों में साहस के भाव को कैसे जागृत किया जाये 95

पंचम दिवस :
कहानी : होनहार बालक 97

षष्ठम दिवस :
कहानी :सार्थक जीवन 99

सप्तम दिवस :
कहानी : साहस की जीत 101

लोरी :
लाड़ला 103

मूल्यपरक कविता :
माँग की बहादुरी 104

अभ्यास के बिन्दु 105

चतुर्थ सप्ताह
मानवीय मूल्य
बहादुरी

बच्चा जन्म से कायर नहीं होता। उसकी नैसर्गिक प्रकृति इतनी निर्भीक होती है कि वह साँप, चूहे, बिल्ली, बंदर, जो भी पास आए, पकड़ने को दौड़ता है। उसे प्रत्येक वस्तु खेल की, विनोद की वस्तु लगती है और संभवतः वह इसीलिए बिना हिचक के प्रत्येक वस्तु की ओर दौड़ पड़ता है। बच्चे के मस्तिष्क में पूर्वारंभ में भय की भावना न जगाई जाए तो हमारा विश्वास है कि वह कभी कायर नहीं हो सकता। घर का वातावरण और माता-पिता का त्रुटिपूर्ण संरक्षण ही उन्हें भीरु बनाता है। भारतवर्ष की अतीतकालीन परंपराओं की दृष्टि से यह अभिशाप - सा लगता है कि हमारे बच्चे डरपोक बनें। वीर प्रसविनी वसुंधरा के लाड़लों को तो वीर और बाँकुरा ही होना चाहिए।

इस निर्माण में आप बहुत अधिक सहयोग दे सकते हैं। निर्भीक प्रकृति के बालकों में भय की भावना पैदा कर देने का बहुत कुछ उत्तरदायित्व अभिभावकों का है। व्यक्तिगत सावधानी और समीपवर्ती वातावरण को शुद्ध रखकर आप अपने बच्चों को निर्भय प्रकृति का बना सकते हैं।

दृष्टांत :

स्वामी विवेकानंद जी जब बालक थे तो एक बार उनकी बहनों ने उन्हें पास के पेड़ में भूत होने की बात सुनाकर डरा दिया। एक रोज बालक विवेकानंद उसी पेड़ पर जा बैठे और बड़ी देर तक भूत के आने की प्रतीक्षा करते रहे। काफी देर हो जाने पर घर में तलाश हुई। उनकी माताजी उसी पेड़ की ओर आ गईं तो वे पेड़ पर बैठे मिले। माँ ने वहाँ बैठने का कारण पूछा तो बालक ने बताया कि वे भूत देखने आए थे। माँ ने समझाया- बेटा ! भूत कुछ नहीं होता, न मानो तो और परीक्षा कर लो। बालक के मन से भूत की कल्पना दूर हो गई और उसका भय मिट गया।

प्रत्येक माता-पिता का यह कर्त्तव्य है कि यदि उन्हें ऐसा मालूम पड़े कि किसी बात को लेकर बच्चे के मस्तिष्क में भय पैदा हो रहा है तो उसे तुरंत दूर कर दिया जाए, ताकि वैसी भावना मस्तिष्क में जड़ न जमा ले।

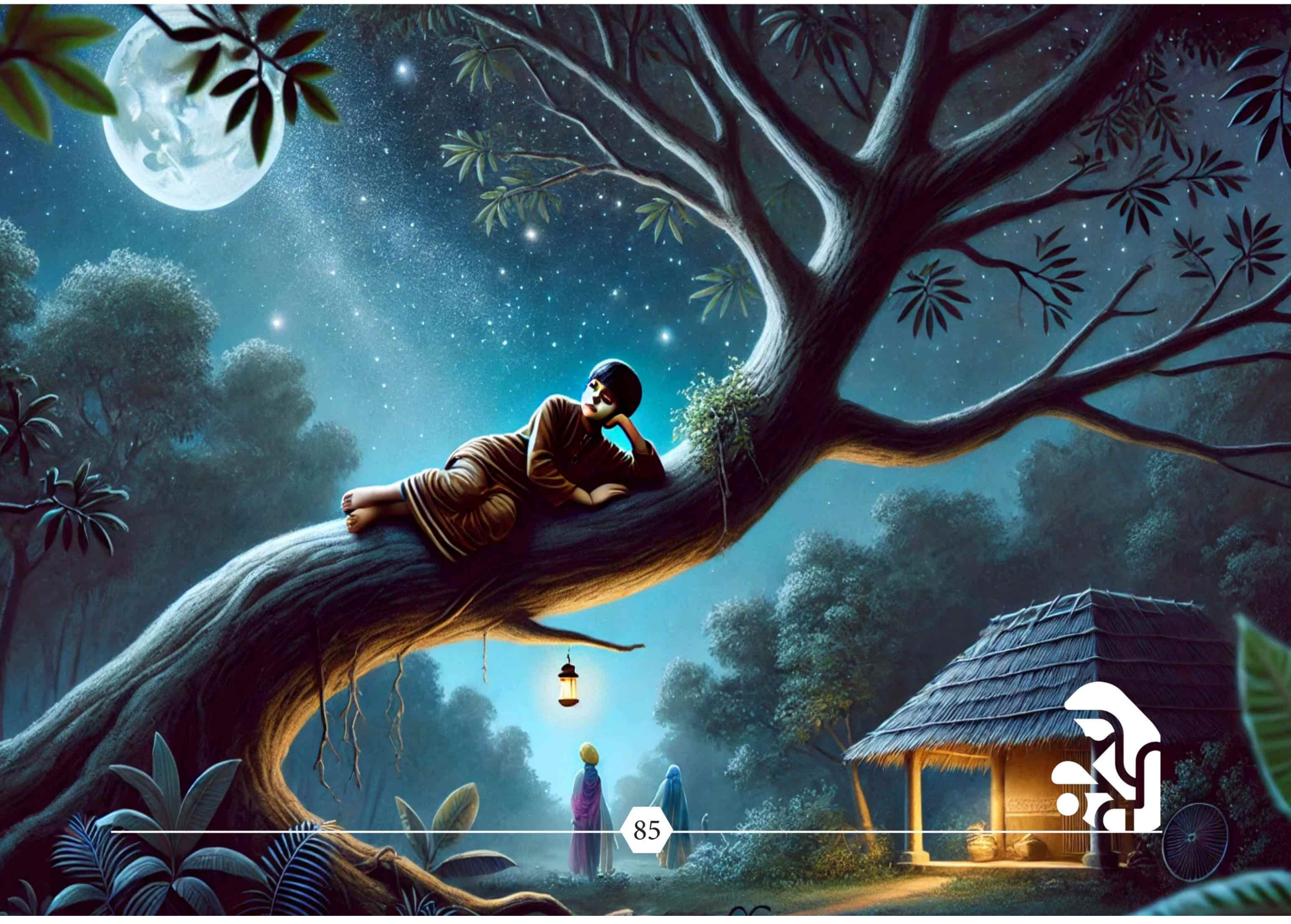

बच्चों को डराया न करें

बच्चों के साथ अपने दैनिक व्यवहार में हम बहुत-सी भूलें कर बैठते हैं। उनका बच्चों के संपूर्ण जीवन पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ता है। बहुत से माँ-बाप अपने लाभ के लिए या बच्चों को सुधारने के लिए उन्हें तरह-तरह के भय दिखाया करते हैं। अबोध बच्चों को अक्सर 'हौवा' से डराया जाता है, "मुन्ना, जल्दी सो जा, दुबक जा, नहीं 'हौवा' आ जाएगा।" ऐसे भय प्रधान संकेत बच्चों को दिए जाते हैं। अबोध बालक समझने लगता है कि 'हौवा' नाम की कोई भयानक वस्तु है, जो उसे खा जाएगी या पकड़ ले जाएगी।

कुछ बड़ा हो जाने पर वह चलने-फिरने लायक होता है तो कुत्ता, शेर, पकड़ ले जाने वाले साधु बाबा का डर दिखाया जाता है। प्रत्यक्ष डर दिखाने के साथ-साथ ही घर में कहे जाने वाले किस्से, कहानियों, जिनमें राक्षस, भूत, प्रेत, चुड़ैल आदि की प्रधानता रहती है, बच्चों में कुछ कम भय पैदा नहीं करते। बहुत से घर वाले तो अमुक स्थान, पीपल का पेड़, मरघट आदि पर भूत-प्रेत का निवास बताकर बच्चों को वहाँ जाने, चौराहा लाँघने से रोकते हैं।

किसी भी रूप में बच्चे को डराने की प्रवृत्ति बहुत ही हानिकारक सिद्ध होती है। इन बातों से बालक के कोमल मन पर भय की भावना इतनी दृढ़ता से जम जाती है कि वह जीवन भर नहीं छूट पाती। वह अंधेरे में, अकेले में डर महसूस करता है। अँधेरे में कोई कपड़ा या वस्तु हवा से हिलती-डुलती देखकर उसकी घिग्गी बँध जाती है। जिन वस्तुओं का नाम लेकर डराया जाता है, यथा- कुत्ता, बिल्ली, बंदर, भालू, साँप, छिपकली, इनके संपर्क में आते ही बालक होश-हवाश खो बैठता है। भयावनी कहानियाँ उसकी विचारधारा और कल्पनाओं को उसी दिशा में मोड़ देती हैं, जिससे बालक अकारण ही भयभीत होता रहता है कई भयप्रद कल्पनाओं और विचारों में उलझकर।

एक दूसरे ढंग से भी माँ-बाप बच्चों में भय की भावना पैदा करते हैं। बात-चीत में, व्यवहार में बच्चों के साथ सख्ती से पेश आना, उन्हें झिड़क देना भी बच्चों को दूसरे ढंग से भयभीत बना देता है। ऐसा बालक बात-बात में दूसरों से डरने लगता है। कुछ करने से पूर्व झिझकता है। धीरे-धीरे यह भय इतना बढ़ जाता है कि वह कुछ नहीं कर पाता।

कई बार किसी पराजय अथवा कटु अनुभव होने पर बालक को चिढ़ाना, धिक्कारना, उस पर व्यंग्य कसना भी उसके साहस को कमजोर करना है। कुछ करने से पहले ही असफलता की, हानि की भविष्यवाणी कर देना भी बच्चों में एक प्रकार का भय पैदा करना है, जिससे बालक फिर इस तरह के कामों में हाथ डालने पर सहम जाता है और वह अपना बढ़ा हुआ पैर तक पीछे हटा लेता है। दिन भर दिए जाने वाले भय प्रधान संकेत किसी भी रूप में क्यों न हो, बच्चों में भय के संस्कार पैदा कर देना उनके स्वाभाविक जीवन के विकासक्रम में अवरोध पैदा कर देना है। निर्द्वन्द्व, निर्भय बालक जल्दी प्रगति करता है, बजाय एक भयभीत मनःस्थिति के बच्चे के जो चालक कुत्ते, बिल्ली, छिपकली, हौवा, भूत, चुड़ैल के नाम से घिघियाते हैं, अँधेरे में, अकेले में रहने से परेशान हो जाते हैं, जो नाना भयप्रद कल्पनाओं में डूबते-उतराते रहते हैं, उनसे क्या आशा की जा सकती है कि वे जीवन में कोई महत्त्वपूर्ण काम कर सकेंगे।

आवश्यकता इस बात की है कि बच्चों में भय की भावनाओं को पैदा ही नहीं होने देना चाहिए। कदाचित् किसी रूप में भय पैदा हो ही जाए तो माता-पिता का कर्त्तव्य है कि बालक की

स्थिति का मनोवैज्ञानिक अध्ययन करके तुरंत उसके मन से भय को दूर करें।

यदि अँधेरे में या किसी स्थान विशेष पर बालक जाने से डरे तो उसे प्रेम के साथ अपना पूर्ण संरक्षण प्रदान करें। स्मरण रहे. बालक अपने अभिभावकों की गोद में अपने आपको सर्व प्रकार से सुरक्षित समझता है। लेकिन माँ-बाप ही जब हौवा या जूजू, भूत, चुड़ैल आदि का डर बताते हैं तो उसका धैर्य और विश्वास नष्ट हो जाता है। समझदार माँ-बाप को चाहिए कि वे बच्चों को इस तरह के कोई काल्पनिक भय न दिखाएँ। चाहे ऐसा उनके भले के लिए ही किया जाए, लेकिन यह सर्वथा गलत है। जिस स्थान पर जाने से बालक डरता हो, उसे अपने संरक्षण का पूर्ण विश्वास देकर उस स्थान पर ले जाना चाहिए और उसकी वास्तविकता का खोखलापन विनोद में ही समझा देना चाहिए। कुछ समय वहाँ खेलने-कूदने में बिताने पर उसके मन से भय की भावना दूर हो जाएगी।

कोई नुकसान हो जाए, वस्तु टूट-फूट जाए, बालक को कोई असफलता मिल जाए तो उसे आप कभी न टोकें, न कोई दोष दें, न मीन-मेख ही निकालें। गिरे हुए बालक को कोसने के बजाय उसे उठने, असफल हो जाने पर सफलता के लिए प्रोत्साहित कीजिए , खतरों, दुर्घटनाओं के लिए उसे डाँट फटकार देने की अपेक्षा उसका हौसला बढ़ाइए, तभी उसका जीवन आने वाली बहुत-सी असफलताओं दुर्घटनाओं, कठिनाइयों को झेल सकेगा। बच्चों से जो नुकसान हो गया, वह तो पूरा होने का नहीं, व्यर्थ ही उन्हें भयभीत करना, डाँटना-फटकारना उनके मनोबल को क्षीण कर देना है। अतः बच्चों को उनकी भूलों पर, असफलता पर, असावधानी पर शरमिंदा न करें, न कोसें।

बच्चों को भूलकर भी ऐसी कथा, कहानियाँ, प्रसंग न सुनाएँ, जिनमें भूत-प्रेत, चुड़ैल हौवा जैसी काल्पनिक, भयानक बातों की प्रधानता हो। इनके स्थान पर उन्हें इतिहास के वीरों की, महान पुरुषों की, साहस शौर्य की घटनाओं, कथाओं को सुनाया जाए। पढ़ने के लिए अच्छा साहित्य हो, जो उनके मनोबल को बढाये।

बच्चों को सहज रूप में खेलने-कूदने देना चाहिए। उनको बात-बात पर टोकना, उन पर तानाशाहों जैसा हुक्म चलाना, दंड देना अनुपयुक्त है। इससे बालक का मनोबल क्षीण होता है और वह सहमा सहमा रहने लगता है। झिझकता है। दब्बूपन की भावना उसमें घर कर लेती है। बच्चे को उसकी सहज स्थिति में रहकर विकसित होने देना चाहिए।

जो माँ- बाप स्वयं डरपोक होंगे तो उनके बच्चे साहसी, निडर बन जाएँ, ऐसा संभव नहीं। माँ-बाप को चाहिए कि अपने बच्चों में निर्भयता, साहस की भावना जगाने के लिए स्वयं इस तरह का आचरण-व्यवहार करें।

इसमें कोई संदेह नहीं कि बाल्यकाल में बच्चों के कोमल मन में जमी हुई भय की भावना उन्हें जीवन भर के लिए अकर्मण्य, कायर एवं भीरु बना देती है। उन्हें एक प्रकार की मानसिक गुलामी का जीवन बिताना पड़ता है; क्योंकि संसार में निर्भीक ही महत्त्वपूर्ण स्थान पा सकते हैं। माँ-बाप का कर्त्तव्य है कि वे अपने बच्चों का जीवन भय के कारण नष्ट न होने दें।

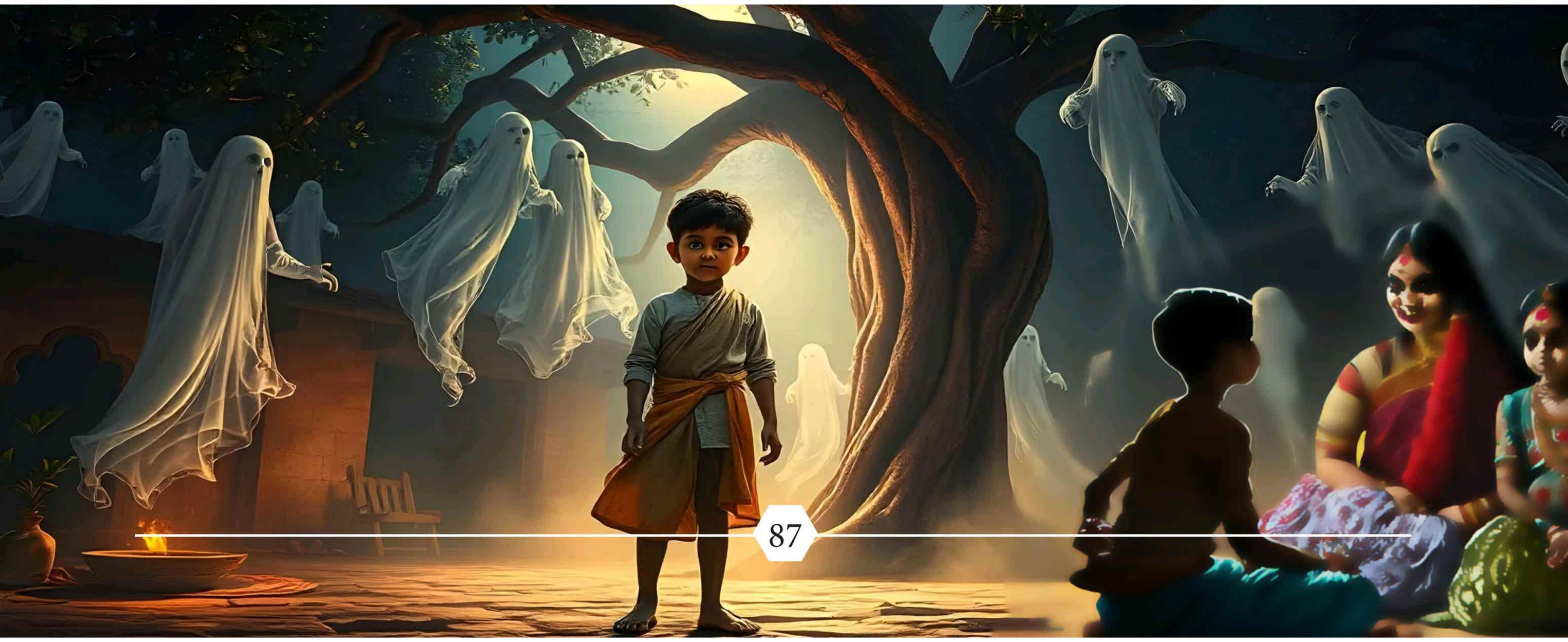

कहानी
प्रथम दिवस

उच्च तिष्ट महते सौभगाय ।

- अथर्व० २। ६। २

श्रेष्ठ बनना ही महान सौभाग्य है । महापुरुष बनने के लिए प्रयत्नशील रहो ।

पहेली ?
मेरी चोटी पर है हरियाली, तन है मगर सफेद । आता हूँ मैं खाने के काम, बताओ मेरा भेद ।

भालू की बहादुरी

भगेलू नाम का एक मदारी था । एक दिन वह जंगल के पास से जा रहा था। उसने देखा कि पगडंडी पर भालू का एक छोटा सा बच्चा पड़ा हुआ है। उसके दोनों पैरों में चोट लगी थी, खून बह रहा था । यह देखकर भगेलू को दया आ गई । उसने अपनी धोती फाड़कर भालू के बच्चे की पट्टी बाँधी, देर तक उसका सिर सहलाता रहा। तब तक खून बहना भी कुछ कम हो गया था। भगेलू आगे चलने के लिए उठ खड़ा हुआ । जैसे ही वह दो-चार कदम बढ़ा होगा कि भालू का बच्चा गुर्राकर उसे बुलाने लगा । भगेलू पीछे लौटा, भालू का बच्चा उसके पैर चाटने लगा । भगेलू समझ गया कि भालू का बच्चा नहीं चाहता कि वह वहाँ से जाए, पर उस जंगल में भला भगेलू कितनी देर और रुक सकता था ? इसलिए उसने साइकिल पर पीछे भालू के बच्चे को बाँधा और घर की ओर चल पड़ा ।

घर जाकर भगेलू ने जैसे ही भालू के बच्चे को उतारा कि पड़ोस के बहुत से बच्चे उसे देखने के लिए इकट्ठे हो गए । भालू का बच्चा इतनी सारी भीड़ को पहली बार अपने आस-पास देख रहा था । वह गुर्राने लगा। भगेलू समझ गया कि उसे यह अच्छा नहीं लग रहा है । " जाओ बच्चों ! फिर आना नहीं तो काट खाएगा ।" यह कहकर भगेलू ने सभी बच्चों को भगा दिया ।

भगेलू ने भालू के बच्चे को खूब पुचकारा, उसके घाव पर दवा लगाई और बहुत सी चीजें खाने के लिए दीं। भगेलू के पास कई बंदर थे, जिन्हें नचाकर खेल दिखाया करता था। उन्हीं के पास उसने भालू के बच्चे को भी बाँध दिया ।

जल्दी ही भालू का बच्चा सभी से खूब हिलमिल गया । सारे बंदर उसके पक्के मित्र बन गए । वह उनसे खूब बातें करता । भगेलू तो उसे बहुत ही प्यार करता था । वह उसे खाने के लिए अच्छी-अच्छी चीजें देता । भगेलू ने प्यार से उसका नाम रखा था - मोती । उसने मोती को खूब सुंदर नाच भी सिखा दिया था । उसके पैरों में घुंघरू बाँध दिए थे । भगेलू के इशारे पर मोती ठुमक ठुमककर ऐसा सुंदर नाचता कि देखने वाला बस देखता ही रह जाता ।

एक दिन की बात है । भगेलू मोती को लेकर पास के गाँवों में गया । वहाँ मोती ने तरह-तरह का तमाशा दिखाया । भगेलू ने उसे बहुत सारी बातें सिखाई थीं, जैसे- पालती लगाकर, आँखें बंद करके ध्यान करना, हाथ जोड़कर नमस्कार करना, आरती

उतारना, व्यायाम करना, नकल करना, नाचना आदि-आदि। एक गाँव में खेल दिखाते हुए भगेलू को रात हो गई। वहाँ से जाना तो जल्दी चाहता था, पर गाँव के बच्चों और बड़ों ने उसे ऐसा घेरा कि उठने ही न दिया। भगेलू को पैसे भी खूब मिल रहे थे, इसलिए भी उसने उठने की जल्दी नहीं दिखाई।

जब खेल खतम हुआ तो रात के आठ बजे थे। घुप अँधेरा हो रहा था। गाँव का रास्ता भी ऊबड़-खाबड़ था। जाड़े के दिन थे। ठंढी हवा बह रही थी। सर्दी के कारण दाँत बज रहे थे। भगेलू सोच रहा था कि अब घर कैसे जाएँ ? हलकी-हलकी बूंदाबादी शुरू हो गई थी, वह अलग। तभी गाँव के मुखिया ने भगेलू से कहा कि आज की रात वह उसी के यहाँ रह जाए। भगेलू ने खुशी-खुशी उसकी बात मान ली।

मुखिया ने भगेलू और मोती को खूब अच्छा खाना खिलाया। मोती को उन्होंने अपनी भैंसों के पास ही बाँध दिया। भगेलू अलाव के पास बैठा मुखिया से देर तक गप-शप करता रहा। फिर गरम- गरम रजाई में घुसते ही जल्दी ही सबको नींद आ गई।

नई जगह होने के कारण मोती को नींद नहीं आ रही थी। बहुत देर तक वह भैंसों से बात करता रहा। जब वे भी सो गईं तो वह बैठा-बैठा न जाने क्या-क्या सोचता रहा ? बचपन से लेकर अब तक की सारी घटनाएँ उसकी आँखों के आगे घूम रही थीं। वह अपने मालिक के बारे में सोच रहा था कि वे कितने अच्छे हैं ? उसका हर समय ध्यान रखते हैं और उसे कितना प्यार करते हैं ? सहसा तभी मोती ने खट-खट की आवाज सुनी। वह चौंक गया, उसने सिर उठाकर देखा। उस घने अँधेरे में भी मोती ने देख लिया कि सामने दो आदमी खड़े थे। वह सोच रहा था कि कौन हैं, कहाँ से आए हैं ? क्यों आए हैं ? तभी एक आदमी ने मोती के पास बँधी हुई भैंस को खोलना शुरू कर दिया। पल भर में ही मोती सारी बात समझ गया। “ओह ! ये तो चोर हैं। भैंस चुराने आए हैं। ” अपने आप से उसने कहा। वह सोचने लगा कि मैंने मुखिया का अन्न खाया है। मुझे उनके प्रति वफादार होना ही चाहिए। यह बात भी उसके मन में कौंध गई कि उसका मालिक भी अंदर सोया है। हो सकता है कि सुबह होने पर वे समझें कि उसी ने चोरी कराई है और उसे मारें-पीटें, बुरा-भला कहें । “मुझे प्राण देकर भी मालिक पर आई विपत्ति को दूर करना होगा।” मोती ने मन ही मन कहा।

तभी मोती ने पाया कि एक आदमी मोती के पास खड़ा होकर उसकी रस्सी खोल रहा है। वह गलती से अँधेरे में मोती को भैंस समझ बैठा था। पल भर में ही एक विचार मोती के मन में आया। वह चुपचाप खड़ा रहा, पर जैसे ही रस्सी खोलकर आदमी उसे लेकर आगे बढ़ा कि मोती ने अपने दोनों पैरों पर खड़े होकर बड़े ही साहस के साथ दोनों हाथों से उसे कसकर पकड़ लिया। चोर बुरी तरह हड़बड़ा गया। वह जोरों से चीखने लगा। रस्सी उसके हाथ से छूट गई। अँधेरे के कारण दूसरा चोर भी समझ न पाया कि मामला क्या है ? उसने समझा कि उसका साथी रंगे हाथों पकड़ा गया है। अतएव वह भी भैंस छोड़-छाड़कर सिर पर पाँव रखकर वहाँ से भागा।

चोर की चीख सुनकर मुखिया और भगेलू भी जाग गए थे। दोनों लाठी लेकर बाहर दौड़े। टार्च से रोशनी डालने पर उन्होंने देखा कि मोती एक आदमी को कसकर पकड़े खड़ा है, दाँतों से उसे काट रहा है। एक भैंस खूंटे से खुली खड़ी है और वह भी रँभा रही है। तुरंत ही उसकी समझ में सारी बात आ गई। सुबह होते ही सारे गाँव में मोती की बहादुरी की बात फैल गई। उसे देखने पूरा का पूरा गाँव ही इकट्ठा हो गया था। गाँव वाले उसके लिए बहुत सारे उपहार भी लाए थे। मुखिया ने भी प्रसन्न होकर भगेलू को बहुत सारा इनाम दिया था। यही नहीं, दूसरे दिन अखबार में मोती की बहादुरी की खबर छपी भी थी।

पहेली का उत्तर : मूली

मा वयं रिषाम ।

- अथर्व० १४ । २।५०

किसी का अन्याय सहन न करो । स्थिति के अनुसार अनीति का प्रतिकार करो ।

पहेली ?

कई लोगों को राह दिखाए, कान पकड़कर लोगों को पढ़ाएं । साथ ही वे नाक भी दबाए, बताओ ये क्या कहलाए ।

वीर बालक

देवनाथ का प्रखर व्यक्तित्व अल्पायु से ही दिखलायी देने लगा था, अब तो वह १४ वर्ष का सुंदर, सद्गुणी किशोर था । वह अपने अच्छे स्वभाव और गुणों के कारण माता-पिता का ही नहीं स्कूल और पास-पड़ोस में भी सभी का लाड़ला था ।

एक रात की बात है। सभी गहरी नींद में सोए थे । देवनाथ को कुछ गरमी-सी लग रही थी, अतएव वह ऊपर छत पर सोया था । आधी रात को सहसा ही उसकी आँख खुली । उसे कुछ शोर-सा सुनाई दे रहा था । उसने नीचे झाँक कर देखा तो एक पल के लिए तो वह भी जड़-सा हो गया । माता-पिता के हाथ-पैर बँधे हुए थे और वे एक कोने में पड़े थे । घर में बारह-चौदह आदमी इधर-उधर घूम रहे थे। वे हर कमरे से सामान ला-लाकर इकट्ठा कर रहे थे देवनाथ को समझते देर न लगी कि यह डाकू दल है और गाँव के अनेक घरों को आज लूट कर ले जाएगा । 'हम सभी दिन-रात खेतों में कठोर परिश्रम करके तो जैसे-तैसे कमाते हैं और ये हमारी वर्षों की खून-पसीने की कमायी उठाकर ले जाएँगे ।' यह बात सोचकर ही देवनाथ का खून खौल उठा । 'अन्याय और आततायी से डरना भी अपराध है, अन्याय को चुपचाप सहने से ही अन्यायी को बल मिलता है । मैं इनका सामना करूँगा ।' ऐसा मन ही मन सोचकर देवनाथ चुपचाप नीचे उतरा । डाकू अनेक थे और वह अकेला था इसलिए उसने युक्ति पूर्वक कार्य करना उचित समझा । वह अँधेरे में छिपते हुए घर से बाहर निकला । बरामदे में पड़ी कुल्हाड़ी उसने उठा ली और बाहर पेड़ों के झुरमुट में छिपकर खड़ा हो गया । डाकू एक-एक करके अंदर से सामान लेकर निकल रहे थे । देवनाथ ने कुल्हाड़ी से उन पर हमला किया । अँधेरे के कारण डाकू उसे ठीक से देख न पाए । बहादुरी से उसने डाकुओं का सामना करते हुए दो डाकुओं को बुरी तरह घायल कर दिया । डाकुओं ने सोचा 'गाँव वाले जग गए हैं, अब वे घेर लिए जाएँगे ।' अतएव वे सारा सामान वहीं छोड़कर भागने लगे । भागते हुए डाकुओं में से भी देवनाथ ने एक को पकड़ लिया । उसे चोट लग गयी थी, पर उसने अपनी परवाह नहीं की । अब तक गाँव वाले भी जाग गए थे । ग्रामीण हंडे और लालटेन लेकर अपने घरों से निकल पड़े । पता लगा कि उस रात डाकुओं ने दस-घरों में डकैती डाली थी, परंतु देवनाथ की बुद्धिमानी से वे अपने साथ थोड़ा-सा ही सामान ले जा पाए थे ।

देवनाथ के साहस की सभी ने मुक्त कंठ से प्रशंसा की । उसी के कारण अनेकों की रक्षा हुई थी । इतना ही नहीं देवनाथ ने जिस डाकू को पकड़ा था, उसे पीट-पीट कर पुलिस ने सारा भेद उगलवा लिया था। घोर संकट की स्थिति में भी साहस तथा बुद्धिमत्ता से कार्य किया जाये तो देवनाथ जैसा छोटा किशोर भी अनेक की रक्षा कर सकता है । उस आतंक मचाने वाले डाकू दल के समाप्त हो जाने से अब ग्रामीण राहत का अनुभव करते और चैन की नींद सोते हैं । सच है, साहस और परोपकार के कार्य के लिए आयु नहीं, संस्कार ही सहायक होते हैं । तभी तो अल्पायु बच्चे भी वह कार्य कर देते हैं, जिन्हें बड़े भी नहीं कर पाते ।

पहेली का उत्तर : चश्मा

देवानामपि पन्थामगन्म ।

- अथर्व० १९। ५९। ३

उस मार्ग पर चलो जिस पर सज्जन चलते हैं । अनीति के मार्ग पर चलने वाला दुःख पाता है ।

पहेली ?

कान घुमाने पर जाने दूं, कान घूमाने पर न आने दूं । रखता हूँ मैं घर का ख्याल, नाम बताओ जल्दी से मेरा आसान-सा है यह सवाल ।

साहसी बालिका

मधुर की माँ बाजार जा रही थीं । वे उस दिन उसे भी साथ लेती गई । उन्हें बाजार से सामान खरीदना था। सामान लाने में सुविधा रहेगी । यह सोचकर उन्होंने मधुर को अपने साथ ले लिया था । माँ-बेटी सामान खरीद कर घर लौट रही थीं । साँझ हो गई थी । घर जाने की जल्दी में माँ तेज-तेज चल रही थीं । वे मधुर से कुछ आगे भी निकल गई थीं । अंधेरा-सा घिरते चले जाने के कारण लोग बाजार से अपना सामान लेकर तेजी से आ-जा रहे थे । भीड़ में जल्दी न चल पाने के कारण और कुछ इधर-उधर देखते हुए चलने के कारण मधुर माँ से पिछड़ गई ।

सहसा मधुर ने देखा कि कोई युवक पीछे से उसकी माँ की चमकती हुई जंजीर की ओर हाथ बढ़ा रहा है । उसने जल्दी से अपने हाथ के थैले जमीन पर पटके और तेजी से जाकर पीछे से दोनों हाथों से युवक का कालर कसकर पकड़ लिया । इस बीच वह जंजीर गायब कर चुका था और भाग ही रहा था कि अचानक हुए इस हमले से वह घबरा गया । उसने तेजी से मधुर को धक्का देकर भागना चाहा, पर मधुर की पकड़ इतनी मजबूत थी कि वह छूट न सका । अब उसने मधुर के पैरों में अपने पैर फँसा कर उसके घुटनों पर टक्कर मारी, जिससे वह गिरते-गिरते बची और लुटेरा उसकी पकड़ से छूटने में सफल होकर भाग निकला । मधुर भी तेजी से उसके पीछे भागती हुई पूरी शक्ति से चिल्लाती जा रही थी- 'चोर-चोर, पकड़ो.... पकड़ो ।' उसकी चिल्लाहट से आसपास जा रहे व्यक्तियों का ध्यान उस ओर आकर्षित हुआ । अनेक व्यक्ति मधुर के साथ दौड़ने लगे। सामने से आते हुए एक व्यक्ति ने भागते हुए लुटेरे को पकड़ लिया। तब तक दूसरे व्यक्ति भी उसके पास आ गए थे । सबने लुटेरे को घेर लिया और लगे उसकी पिटाई करने। लुटेरा बड़ा ही गिड़गिड़ा रहा था और हाथ जोड़कर कह रहा था-'मुझे छोड़ दो, मैंने कुछ नहीं किया ।'

हाँफती हुई मधुर ने भीड़ को बताया कि यह व्यक्ति उसकी माँ के गले से जंजीर काटकर भागा है । जंजीर इसी के पास है और कहीं छिपा रखी है । भीड़ में से कई व्यक्ति चिल्लाए 'मारो इसे और लो इसकी तलाशी ।'

भीड़ युवक की पिटाई करते हुए कह रही थी- 'जंजीर दे दो, हम तुम्हें छोड़ देंगे ।' पर वह बार-बार यही कर रहा था कि उसने वह देखी तक नहीं । तब भीड़ से दो-तीन व्यक्ति उसकी तलाशी लेने के लिए निकले । लुटेरा इधर-उधर मुड़ रहा था । उसने बड़ी कठिनाई से अपनी तलाशी लेने दी । आखिर कमीज की

बाँह के मुड़े हुए सिरे से जंजीर निकल ही पड़ी। मधुर की माँ ने आगे बढ़कर अपनी जंजीर सँभाल ली। उन्होंने पीछे निगाह दौड़ाकर मधुर के हाथ में लगे थैले खोजे। दो थैले सड़क के बीचों-बीच पड़े हुए थे। उन्होंने जल्दी से उन्हें उठाया और उसी ओर दौड़ी जिधर मधुर गई थी। हाँफते हुए वह भीड़ के पास पहुँच गई थीं। उन्हें जंजीर पा सकने की कोई उम्मीद नहीं थी। वह कुछ डर भी रही थी कि मधुर किसी खतरे में न पड़ जाए।

भीड़ अब बहुत अधिक क्रुद्ध हो चुकी थी। उसने लुटेरों को मार-मार कर अधमरा कर दिया। फिर वे उसे घसीटते हुए थाने की ओर ले चले, मधुर और उसकी माँ से भी उन्होंने वहाँ चलने के लिए कहा। उन्होंने थाने में उसकी पूरी रिपोर्ट लिखवाई। थानेदार ने लुटेरे के हाथों में हथकड़ियाँ डाल दीं और उसे हवालात के अंदर बंद कर दिया।

मधुर और उसकी माँ ने अपने साथ आए व्यक्तियों को धन्यवाद दिया। उन्हीं के सहयोग से वे जंजीर पा सकी थीं और अपराधी को पकड़ा जा सका था। उन व्यक्तियों ने मधुर के साहस की प्रशंसा की और कहा कि यदि तुम ही इतनी तत्परता न बरततीं तो अपराधी भाग छूटता। थानेदार ने भी पूरी घटना सुनकर मधुर की प्रशंसा की और कहा- 'मिल-जुलकर सामना करने से अपराधी तत्त्व दुर्बल पड़ जाते हैं। दो-चार व्यक्तियों के सामने तो वे अपनी धूर्तता दिखा सकते हैं, परंतु जब पूरा का पूरा समूह उनका सामना करता है, तो वे भी शक्तिहीन हो जाते हैं। अपराधी को बढ़ावा तब मिलता है, जब व्यक्ति यह सोच लेते हैं कि हमें क्या पड़ी, हम क्यों बोलें और क्यों किसी की सहायता करें? पर यह प्रवृत्ति गलत है, समाज के लिए घातक है, इससे अपराधी तत्त्व और सिर उठाते हैं। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि हम पर भी कभी संकट आ सकता है। अगर हम आपस में दूसरे की सहायता नहीं करेंगे तो दूसरे ही हमारी क्यों सहायता करेंगे ?'

थानेदार ने उन सभी व्यक्तियों की प्रशंसा की, जिन्होंने मधुर का साथ दिया था और अपराधी को पकड़वाया था।

रात होने लगी थी। थाने से सभी खुशी-खुशी अपने घर की ओर चले। मधुर और उसकी माँ घर पहुँचीं तो देखा कि पिताजी और भाई उन्हीं की प्रतीक्षा कर रहे थे। बड़ी देर लगा दी तुम लोगों ने। दिन में ही बाजार का काम क्यों नहीं कर लिया करतीं। पिताजी कहने लगे।

आ तो समय से ही जाते, पर एक बहुत बड़ी मुसीबत में फँस गए। भगवान की कृपा है कि राजीखुशी घर आ गए। मधुर की माँ बोली।

क्यों? ऐसा क्या हुआ ? पिताजी और भाई एक साथ बोल पड़े।

मधुर की माँ ने उन्हें पूरी घटना सुनाई। पिताजी और भाई ने मधुर के साहस और तत्परता की बहुत प्रशंसा की। उसके कारण वे चार-पाँच हजार की हानि से बचे थे। फिर मधुर के पिताजी उसकी माँ से बोले- 'तुम अकेली बाजार जातीं तो निश्चित ही जंजीर लुटा कर लौटतीं। हमने तुमसे कितनी बार कहा है कि सोने के कोई भी आभूषण पहनना आजकल खतरे से खाली नहीं।

आज आपकी बात मेरी समझ में अच्छी तरह से आ गई है। जब अन्य धातुओं के आभूषण इससे सुंदर और सस्ते मिल सकते हैं तो फिर इतना खतरा मोल लेने की क्या आवश्यकता? यह कहते हुए मधुर की माँ ने अपनी सोने की जंजीर और चूड़ियाँ उतारकर मेज पर रख दीं।

माँ की तत्परता देखकर बच्चे हँसते हुए बोले-'देर आए दुरुस्त आए।

दूसरे दिन यह घटना समाचार पत्रों में छपी। नगर किशोर संस्था ने मधुर को उसके साहस के लिए पुरस्कृत किया। जागरूक रहने वाला और साहस से काम लेने वाला व्यक्ति ही दूसरों द्वारा छले जाने से बचता है तथा अन्यों को भी बचाता है।

पहेली का उत्तर: ताला-चाबी

स्वयन्तो नापेक्षन्ते ।

- यजु० ३०

तेजस्वी दूसरों का मुँह नहीं ताकते । जो आत्मनिर्भर हैं, वे दूसरों की सहायता नहीं लेते ।

पहेली ?
बिन पानी के वो घर बनाए, सबके घर में वो मिल जाए ।

घनश्याम की वीरता

'तुम्हें रुपए देने हैं या नहीं' क्रुद्ध आवाज में दीवान भीमराव जी चिल्ला रहे थे।

'मैं जल्दी ही दे दूँगा । इस बार सूखा पड़ गया इसलिए नहीं दे पाया । आपने तो मेरी सदा सहायता ही की है। थोड़ी दया और कीजिए साहब ।' दोनों हाथ जोड़कर गरीब कृषक कह रहा था।

'मैं कुछ नहीं जानता। बस मैं इतना ही कह रहा हूँ कि यदि तुमने एक सप्ताह के अंदर पैसे नहीं दिए तो तुम्हारे घर की नीलामी करा दूँगा । तुम्हें रुपए इसलिए नहीं दिए थे कि उन्हें दबा कर बैठ जाओ। मूल देना तो दूर रहा, तुमने तो दो वर्ष में ब्याज तक नहीं दी है।' दीवान जी चिल्लाकर बोले फिर वे क्रोध से पैर पटकते बैलगाड़ी में जाकर बैठ गए। उनके दोनों बेटे एक कोने में सहमे से खड़े यह सब सुन रहे थे। पिता की दृष्टि उन पर गई तो बोले- 'अरे तुम लोग क्या कर रहे हो यहाँ। स्कूल जाओ जल्दी से नहीं तो देर हो जाएगी।'

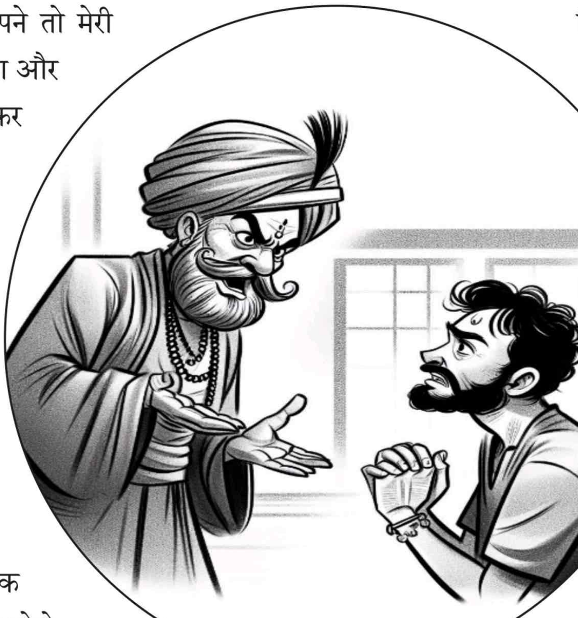

पिता का आदेश सुन कर घनश्याम और उसके भाई ने बस्ता उठाया और स्कूल की ओर दौड़ चले। रास्ते भर घनश्याम के मन में वही दृश्य उभरता रहा। दीवान जी का क्रोध से तमतमाया चेहरा और रौबीली आवाज जैसे उसके सामने अभी भी साकार थे । पिता का करुण चेहरा भी उसकी आँखों के आगे आ रहा था। उसने सुना था कि दीवान बड़ा कठोर है । जो कहता है, वह करते उसे देर नहीं लगती । वह

अनेक गरीब व्यक्तियों को ऋण देकर उन्हें ऐसे ही सताया करता था। कई बार तो घनश्याम ने लोगों को उसकी मौत की कामना करते हुए भी सुना था।

यही बात सोचते-सोचते घनश्याम कृष्ण काले आगे बढ़ रहा था कि बाजार के बीच में उसे दीवान जी की बैलगाड़ी दिखाई दी। कुछ हल्ला-सा भी सुनाई दिया। लोग इधर-उधर भाग रहे थे। घनश्याम भी एक ऊँची दुकान पर चढ़ गया और देखने लगा कि मामला क्या है? उसने देखा कि दीवान की गाड़ी के बैल बिगड़ गए थे, वे तेजी से भाग रहे थे। उनके साथ जुती गाड़ी घिसटती पीछे चल रही थी। गाड़ी पर बैठे दीवानजी के हाथ से लगाम छूट चुकी थी। कुछ पल बाद ही उसने देखा कि गाड़ी उलट गई। जुआ तुड़ाकर एक बैल तो भाग गया, पर दूसरा दीवान जी को अपने सींगों से मारने दौड़ा। लोग अपनी जान बचाने के लिए इधर-उधर भाग रहे थे। किसी का यह साहस न हो पा रहा था कि दीवान जी को बचाए। एक बार घनश्याम के मन में आया- 'इसको अपनी करनी का दंड मिल रहा है।' पर शीघ्र ही उसे मास्टरजी की सीख याद आ गयी, जो सदा यह कहा करते थे कि संकट में पड़े हुए की रक्षा करना ही मनुष्यता है। वे बालकों को वीर बच्चों की कहानियाँ सुना-सुना कर उनमें वीरता का संचार किया करते थे। घनश्याम अपने प्राणों की परवाह न कर वहाँ से कूदा और दौड़कर बैल के सामने जा खड़ा हुआ। लोग साँस रोके यह दृश्य देख रहे थे। घनश्याम ने तेजी से बैल की रस्सी पकड़ी और अपनी ओर खींचने लगा। क्रुद्ध बैल और भी चिढ़ गया और दीवान को छोड़कर घनश्याम पर झपटा, पर घनश्याम तो पहले से ही इसके लिए तैयार था। उसने बिना समय खोए और साहस छोड़े विलक्षण चतुराई से जल्दी से बैल की रस्सी एक खंभे से लपेट दी। बैल को बँधा देख और भय का कारण दूर जानकर लोग पास आने लगे। थोड़ी देर में बैल भी शांत हो गया। घनश्याम और दूसरे व्यक्तियों ने मिलकर दीवान जी को उठाया।

उन्होंने घनश्याम को गले लगाते हुए कहा-'बेटा!' आज तुमने अपने प्राणों की परवाह न करके मेरी रक्षा की है। मैं तुम्हारे उपकार से झुक गया हूँ। किसके बेटे हो तुम?'

घनश्याम ने अपने पिता का नाम बताया तो उन्होंने ध्यान से उसकी ओर देखा। उन्हें याद आया कि जब वे किसान को डाँट रहे थे, तो यही बच्चा सहमा सा एक कोने में खड़ा था। उनका मन उन्हें धिक्कारने लगा - एक मैं पापी हूँ, जो दूसरों को सताता हूँ और एक यह है, जिसने मुझ अपकारी का भी ऐसा उपकार किया है।'

उन्होंने घनश्याम का हाथ पकड़ा और बोले 'चलो मैं तुम्हारे पिता से मिलना चाहता हूँ।'

वह किसान तो दीवानजी को फिर से आया देखते ही काँपने लगा। घनश्याम को उनके साथ देखकर उसका मन और भी भयभीत हो गया। इस शरारती बालक ने न जाने क्या अपराध किया है। अब तो भगवान ही रक्षक है।' वह मन ही मन सोचने लगा।

दीवान जी ने किसान को पूरी बात बताई और कहा कि पूरा पैसा उसने माफ कर दिया है। किसान बहुतेरा कहता रहा- 'नहीं-नहीं मैं आपका पैसा दे दूँगा, बस मुझे थोड़ा समय और दे दीजिए।" परंतु दीवान ने उसकी बात स्वीकार न की। वे बोले-'मैं तुम्हारे ऋण को कभी चुका नहीं सकता।'

घनश्याम कृष्ण काले के साहस और दयालुता ने पिता के संकट को दूर कर दिया, उसे वीर बच्चे के रूप में भी पुरस्कृत किया गया।

पहेली का उत्तर:
मकड़ी व जाला

बच्चों की समस्याओं के मनोवैज्ञानिक तथा व्यावहारिक समाधान

- पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य

बच्चों में साहस के भाव को कैसे जाग्रत किया जाए

कुछ निश्चित नियमों को अपनाकर बच्चों में शौर्यभाव जाग्रत किया जा सकता है। जैसे-

1. बच्चों को कहानी बहुत प्रिय लगती है। माता-पिता साहसी वीरों की कहानियाँ सुनाकर उनमें साहस के भाव जगा सकते हैं। रात्रि में सोने से पूर्व उन्हें वीरों की गौरव गाथाएँ सुनानी चाहिए।

2. बच्चे के व्यक्तित्व का आदर करना बहुत आवश्यक है । थोड़ी-थोड़ी भूलों पर उसे बहुत ज्यादा डॉट फटकार लगाने से अथवा बुरी तरह पीटने से बच्चों का शौर्यभाव दब जाता है। वे कायर, डरपोक और दब्बू बन जाते हैं। बच्चे को आदर की दृष्टि से देखना चाहिए। उसका उतना ही आदर होना चाहिए, जितना युवराज का होता है। आप यदि उससे सम्मानपूर्वक वार्ता करेंगे, उसकी बातों को ध्यानपूर्वक सुनेंगे, उसकी उचित माँगों को यथाशक्ति पूरा करने की चेष्टा करेंगे तो वह एक साहसी बालक बनेगा।

3. बहुत-सी माताएँ अथवा पिता ऐसे होते हैं, जो अकारण बच्चे को अपशब्द कहा करते हैं। 'तू नालायक है, तुझसे कुछ भी न हो सकेगा, तूने तो खानदान का नाम डुबो दिया, 'घर में बैठा-बैठा मक्खी मारा करता है' आदि शब्द बच्चों को यथाशक्ति नहीं कहने चाहिए।

4. स्वामी विवेकानंद कहते हैं कि 'जो माता-पिता दिन-रात बच्चों के लिखने- पढ़ने पर जोर देते रहते हैं और कहते हैं कि इसका कुछ सुधार नहीं होगा, यह मूर्ख है, गधा है आदि-आदि, उनके बच्चे अधिकांश वैसे ही बन जाते हैं। बच्चों को अच्छा कहने से और प्रोत्साहन देने से समय आने पर वे स्वयं ही अच्छे बन जाते हैं।

5. दैनिक कार्यों में बच्चों का सहयोग लीजिए। कभी-कभी उनको उनकी सामर्थ्य से अधिक का भी कुछ काम करने को दीजिए प्रोत्साहन देकर उनसे काम पूरा कराइए । यदि कोई कठिनाई आए तो उससे पार निकलने की तरकीब भी बताइए, उनका मार्गदर्शन कीजिए। जब वे काम पूरा कर लें तो उनकी पीठ ठोकिए, शाबाशी दीजिए। इससे उनका साहस बढ़ेगा। समय आने पर वे बड़े से बड़ा काम अपने हाथों में लेने से न हिचकेंगे।

6. उनके स्वाभिमान को भूलकर भी ठोकर मत मारिए। एक छोटी घटना याद आती है। एक सिपाही के एक लड़का था। एक दिन वह बच्चा किसी से रूठ गया और लाठी उठाकर उसे मारने के लिए दौड़ा। वह व्यक्ति भाग रहा था और सिपाही का बच्चा उसे खदेड़ रहा था। सिपाही ने जब यह देखा तो वह स्वयं अपने बच्चे के पीछे-पीछे दौड़ा। उसे समझा-बुझाकर वह हाथ से लाठी लेने का प्रयत्न कर रहा था। बड़ी दूर तक पीछे समझाते हुए जाने पर तब कहीं बच्चा माना। उसने रुककर लाठी अपने पिता को दे दी। लोग इस घटना को देख रहे थे। उन्होंने सिपाही से पूछा कि बच्चे की उद्दंडता देखकर आपने उससे तुरंत लाठी क्यों नहीं छीन ली ? सिपाही ने उत्तर दिया कि ऐसा करना तो सरल था, परंतु इससे बच्चे का साहस कुचल जाता। मैं उसमें विवेक-बुद्धि उत्पन्न कर उसे बुरे कामों से रोकना चाहता हूँ, लेकिन उसके साहस को कुचलना नहीं चाहता।

7. देशाटन कराने, ऐतिहासिक स्थलों को दिखाने तथा वीर पुरुषों के संपर्क में लाने से बच्चे का शौर्यभाव जाग्रत होता है। जब भी आपको समय मिले, आप उसे अच्छे स्थानों को दिखाने के लिए ले जाइए।

8. सबसे बड़ा आदर्श तो आप स्वयं उपस्थित कर सकते हैं, पर रात में चूहे की खड़बड़ाहट से भयभीत होने वाले माता-पिता भला अपने बच्चे में साहस के भाव कैसे भरेंगे !

9. साहस के भाव को दृढ़ करने के लिए सफलता प्राप्त करना आवश्यक है। जब खेल में बच्चे की जीत होती जाती है, तो उसका साहस बढ़ जाता है, निर्भयता आने लगती है और आत्मविश्वास बढ़ने लगता है। इसी प्रकार परीक्षा में सफलता मिलने पर बच्चे के अंदर से भय की भावना कम होती है, उसका साहस बढ़ने लगता है। अतः आप सदैव यह प्रयत्न करें कि खेल में उसके साथी ऐसे हों, जो उसके समवयस्क हों अर्थात प्रतिस्पर्धा में उसके जोड़े के हों। परीक्षा में सफल कराने के लिए आप उसकी शक्ति को तौल लें। प्रायः ऐसा होता है कि बहुत कच्ची उम्र में कुछ लोग अपने बच्चे से आशा करने लगते हैं कि वह दो-दो प्रारंभिक कक्षाएँ एक साथ पास करे। इसके लिए पैसे वाले लोग कई-कई ट्यूशन लगाकर उस पर और बोझ लादते जाते हैं। पढ़ाई का बोझ जब बच्चे पर अधिक हो जाता है तो दो-तीन कक्षाओं में तो वह तेजी दिखाता है, पर आगे चलकर उसको गति मंद पड़ जाती है। वह बैल की तरह अगली कक्षाओं का बोझ उठाने में सर्वथा असमर्थ हो जाता है। तब परीक्षा में अनुत्तीर्ण होने के अतिरिक्त और क्या चारा हो सकता है ? माता- पिता तब बच्चे को बुरा-भला कहकर उसकी हिम्मत को पस्त करने लगते हैं। वे इस बात को नहीं समझते कि दोष तो उन्हीं का है। इसलिए यदि आपका बच्चा कक्षा में कमजोर चल रहा है तो उत्तम तो यह होगा कि आप उसे आगे की कक्षाओं में जाने से रोककर उसकी कमजोरी को दूर कीजिए। शिक्षकों को लालच दिखाकर सिफारिश पहुँचाकर अथवा किन्हीं अन्य अनुचित उपायों से उसे कच्ची तरक्की दिलाना कदापि हितकारी सिद्ध न होगा। बच्चे को भी आप समझा बुझाकर यही परामर्श दीजिए कि यदि वह उसी कक्षा में जिसमें वह कमजोर है, एक वर्ष और पढ़कर अपनी पिछली कमजोरी मिटा लेगा तो फिर आगे कभी फेल होने की संभावना न रहेगी। यदि आप बच्चे से ऐसा करा लेते हैं तो उसका साहस कभी कम नहीं हो सकता। पहले जैसी स्थिति तो अब नहीं है, जिसमें वीर सैनिकों के उदाहरण काम में आएँ, लेकिन खेती-बारी, व्यापार, पढ़ाई, नौकरी एवं उद्योग धंधों में जिन लोगों ने अपूर्व साहस का परिचय देकर अपने बिगड़े कारोबार को जमाया हो, ऊसर खेती को आबाद कर उसे अन्नपूर्ण बनाया हो, निर्धनतारूपी पिशाचिनी से मोर्चा लेते हुए जो लड़के अपनी पढ़ाई को जारी रखकर आखिर में सफल हुए हों, ऐसे लोगों के उदाहरण बच्चों के सामने रखने चाहिए। यदि हो सके और ऐसे लोग अपने क्षेत्र में हों तो कभी-कभी अवसर पाकर अपने बच्चों को उनसे मिलाना, उनके प्रेरणात्मक संपर्क में लाना हितकर होता है।

बच्चों को सामूहिक सेवा के कार्यक्रम में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। स्काउटिंग, रेडक्रॉस, सेंट जॉन्स एंबुलेंस अथवा सेवा समितियों के कार्यों में भाग लेने से कभी नहीं रोकना चाहिए। उनको प्रोत्साहित भी करना चाहिए। स्काउटिंग बच्चों के लिए बड़ा उपयोगी साधन होता है।

10. नदी, पहाड़, जंगल, प्राकृतिक दृश्यों का अवलोकन जहाँ एक ओर बच्चे में व्यावहारिक ज्ञान भरता हैं, वहाँ वे दूसरी ओर कल्पित धारणाओं, भय उत्पादक शंकाओं का निवारण करते हैं। अतः समय-समय इन स्थानों पर बच्चे को ले जाकर जानकारी करानी चाहिए।

11. साहस के विपरीत अवगुण 'भय' है। भय कभी- कभी तो सत्य परिस्थितियों से पैदा होता है, परंतु अधिकांशतः शंकाओं के आधार पर उत्पन्न हो जाता है। भूत-प्रेत का भय, देवी-देवताओं का भय, पुलिस और अफसर का भय, ये सब छोटे बच्चों को अपने माता-पिता, परिवार तथा गाँव वालों से मिलते हैं। हमारे देश में अफवाहें बहुत उड़ती हैं। लोग सत्य बात का पता कम लगाते हैं और मनगढ़ंत, कपोल कल्पित बातों पर तुरंत विश्वास कर लेते हैं। ये सारी बातें उनके हृदयों में भय उत्पन्न करती हैं। उनका साहस दब जाता है। इसलिए जहाँ एक ओर झूठी डींग हाँककर आप बच्चे के हृदय में अविश्वास पैदा न करें, वहाँ यह भी आवश्यक है कि उसके सामने कायरता की बातें ना करें, भविष्य के कर्णधारों को कायर बनाना कोई बुद्धिमानी का कार्य नहीं है

कहानी
पंचम दिवस

यद्भद्रं तन्न आ सुव ।

- यजु० ३०

जो श्रेष्ठ है, उसी को ग्रहण करो । जो बुरा है, उसे छोड़ो, चाहे वह अपना हो या पराया ।

पहेली ?
बताओ वह कौन-सी चीज है, जो जागे रहने पर ऊपर रहती है और सोने पर गिर जाती है ।

होनहार बालक

भारत के पूर्व में इम्फाल नामक एक प्रसिद्ध स्थान है । यह हाथ के पंजे की तरह फैली असम की पहाड़ियों पर बसा एक रमणीक नगर है । इसी इम्फाल क्षेत्र में ही वीर सपूत सुभाषचंद्र बोस की आजाद हिंद फौज ने भारत को स्वाधीन बनाने के लिए अंग्रेजों की सेना पर सबसे बड़ा आक्रमण किया था । भारत चीन युद्ध के समय भारतीय सेनाओं ने चीन के धूर्त आक्रमणकारियों को यहीं परास्त कर आगे खदेड़ दिया था ।

एक दिन की बात है, लाला गांगटे दूसरे बच्चों के साथ घर से घूमने निकला । सारे बच्चे खेलते-कूदते बस्ती के पास बने तालाब के किनारे पहुँचे । वहाँ थोड़ी देर बैठकर दूसरे बच्चों ने दौड़ प्रतियोगिता प्रारंभ की । वे सभी वहाँ से दो फलांग पर स्थित बौद्ध मंदिर की ओर एक साथ दौड़ पड़े। तालाब के किनारे खड़ा लाला उन्हें दौड़ते हुए देखकर प्रसन्न हो रहा था । इस दौड़ में उसने भाग नहीं लिया था । इसका कारण था डेढ़ वर्ष का उसका भाई चोंचो । जब वे खेलने आए थे तो चोंचो भी उससे लिपट गया था और उसकी गोद से उतरा ही न था । लाला ने उसे जबरदस्ती उतारने की कोशिश की तो उसकी माँ बोली- 'लाला ! इस समय मैं घर के काम में जुटी हूँ । तुम इसे रोते हुए छोड़ जाओगे तो यह मुझे तंग करेगा। अच्छा हो तुम इसे भी खिला लाओ ।'

तब लाला चोंचो को लेकर घर से निकल आया था। चोंचो भी बच्चों के बीच में बड़ा प्रसन्न था । कभी वह ताली बजाकर बहुत नाचता तो कभी किलकारी मारकर हँसता । बच्चों को भागते देखकर चोंचो को भी बड़ा अच्छा लग रहा था । वह भी जबरदस्ती लाला की गोद से उतर आया और वहीं इधर-उधर भागने लगा । पर यह क्या ? जैसे ही दूसरे बच्चे आँख से ओझल हुए, लाला ने पीछे देखा तो वह बिना समय खोए तालाब के किनारे दौड़ चला । वहाँ उसने देखा कि चोंचो डूब रहा है, बस उसके सिर के बाल ही पानी के ऊपर थे। लाला ने जल्दी से उसके बाल पकड़कर खींचने की कोशिश की पर उसका हाथ न पहुँचा । उल्टे वह

पानी के बहाव के साथ दूर छिटक गया। पलभर के लिए लाला सहमा कि चोंचो की यह स्थिति और आसपास कोई नहीं, पर शीघ्र ही उसने अपने को नियंत्रित किया। संकट की उस घड़ी में भी लाला ने बिना धैर्य खोए बुद्धिमानी से काम लिया। वह समझ गया था कि इसे बचाना अब उसके बस की बात नहीं है। लाला तुरंत तालाब के सामने बने घर में घुस गया। वहाँ एक आदमी का हाथ पकड़कर खींचते हुए बोला-'जल्दी कीजिए ! तालाब में एक बच्चा डूब रहा है ।'

लाला की घबराई हुई सूरत देखकर वह आदमी तुरंत भागा चला आया और सरोवर में कूद पड़ा। बच्चा तब तक तालाब के बीच में पहुँच चुका था। वह तैरकर वहाँ पहुँचा और बालक को पकड़ा। बाहर निकाल कर बड़ी देर तक उसने लाला की सहायता से उसे प्राथमिक चिकित्सा दी तब कहीं जाकर चोंचो ने अपनी आँखें खोलीं।

तब दूसरे बच्चे भी अपनी दौड़ पूरी करके वहाँ आने लगे थे। पूरी बात जानकर वे सहम गए। एक बच्चा तुरंत भागकर चोंचो की माँ को बुला लाया। वह आदमी उसे बच्चा सौंपते हुए बोला-'लो बहिन ! सँभालो अपना बालक। इतने छोटे बच्चे को तुम्हें घर से बाहर नहीं भेजना चाहिए और वह भी इन छोटे छोटे बालकों के साथ।'

फिर उसने लाला की ओर इशारा करते हुए कहा-'इस छोटे बालक ने आज बड़ी सूझबूझ से काम लिया है। इसी के कारण ही बच्चे के प्राण बचे हैं।' वह व्यक्ति बच्चों से कहने लगा- बच्चों ! देखा तुमने कि कठिनाई आने पर धैर्य और बुद्धि से काम लेकर ही उससे निबटा जा सकता है। मुसीबत आने पर जो घबरा जाता है वह सफलता तो खो ही बैठता है साथ ही कष्ट भी पाता है।' फिर उसने लाला की पीठ ठोकी और उसकी बहुत प्रशंसा की।

चार वर्ष के बालक ने डेढ़ वर्ष के बच्चे की जान बचाई, यह जो भी सुनता था आश्चर्य प्रकट करता था और साथ ही लाला की सूझबूझ की तारीफ भी । प्रधानमंत्री ने गणतंत्र दिवस के पर्व पर लाला गांगटे को अन्य बहादुर, वीर और सूझबूझ से सेवा-सुरक्षा, करने वाले बच्चों के साथ पुरस्कृत किया। पुरस्कृत बच्चों में वह सबसे छोटा बालक था।

पहेली का उत्तर : पलके

स्वयन्तो नापेरङ्गन्ते ।

- यजु० ३०

तेजस्वी दूसरों का मुंह नहीं ताकते । जो आत्मनिर्भर हैं, वे दूसरों की सहायता नहीं लेते ।

पहेली ?

काली है, लेकिन कोयला नहीं। लंबी है मगर डंडी नहीं, बांधी जाती है, पर डोर नहीं, बताओं यह क्या है ?

सार्थक जीवन

एक बार ओजस अपने माता-पिता के साथ कलकत्ता जा रहा था। वहाँ उसके मामाजी रहते थे। उनके बेटे का विवाह था, उसी में सम्मिलित होने के लिए सभी जा रहे थे । लंबा रास्ता और रात का सफर था । सभी खा-पीकर लेट गए थे । ठंडी हवा के झोंके लगे तो जल्दी ही यात्रियों को नींद आने लगी ।

अर्द्धरात्रि की नीरवता थी । गाड़ी थोड़ी देर पूर्व ही मुगलसराय स्टेशन से आगे बढ़ी थी । वह पूरी गति से दौड़ रही थी । अधिकांश यात्री सोए हुए थे । सहसा शोरगुल सुनकर ओजस की आँख खुल गई । वह ऊपर की बर्थ पर लेटा हुआ था । उसने नीचे झाँक कर देखा तो वह चौंक पड़ा । एक लुटेरा बंदूक ताने खड़ा था और दूसरा उसके साथ खड़ा हुआ लोगों के कीमती सामान बटोर रहा था । डिब्बे में अनेक व्यक्ति थे, परंतु बंदूक के डर से वे कोई प्रतिरोध नहीं कर पा रहे थे । वे चुपचाप अपने पैसे, आभूषण और अन्य बहुमूल्य वस्तुएँ उन्हें सौंपते जा रहे थे । ओजस की माँ ने भी अपना सूटकेस पकड़ा दिया था । ओजस जानता था कि उसमें कीमती साड़ियाँ और आभूषण हैं। वह तिलमिला उठा । तभी उसने देखा की उसकी माँ रो रही हैं । एक दूसरी महिला भी गिड़गिड़ाती हुई लुटेरे से कह रही थी- ‘मेरा बेटा अस्पताल में भरती है । उसके इलाज के लिए रुपयों की सख्त जरूरत है । मुझ पर दया करो । मेरा हार मुझे दे दो । इसे बेचने पर ही मैं बेटे की दवा के लिए रुपए जुटा पाऊँगी ।’

परंतु लुटेरों पर तो किसी बात का कोई प्रभाव ही न था । उलटे बंदूकधारी ने बंदूक का कुंदा उसके सिर पर मारते हुए कहा-‘बुढ़िया! बक-बक मत कर । चुप रह, नहीं तो एक गोली में ढेर हो जाएगी ।’

ओजस का किशोर-रक्त बड़ी देर से खौल रहा था । वह भीरु, कायर या स्वार्थी नहीं था जो विपत्ति देखकर डर जाता या केवल अपने बचाव की बात सोचता और दूसरों की परेशानी को अनदेखा कर देता । ऐसे व्यक्तियों को तो वह समाज और राष्ट्र का भार माना करता था । ओजस यह भी जानता था कि संकट के समय यदि साहस न खोया जाए और मिल-जुल कर कोई उपाय अपनाया जाए तो रास्ता मिल ही जाता है । उसे सहसा ही एक विचार आया । पास बैठे एक लड़के के कान में उसने कुछ कहा । दोनों ने ही एक-एक सूटकेस उन लुटेरों के सिर पर ऊपर से खींचकर मारा । निशाने ठीक लगे थे । बंदूक छिटक कर दूर जा गिरी थी । दोनों व्यक्तियों ने हाथों से

अपना सिर थाम लिया था। दो किशोरों को इस प्रकार आततायियों का प्रतिरोध करते देखकर अब बड़ों में भी साहस का संचार हो गया था। चार-पाँच युवकों ने उन दोनों लुटेरों को कसकर पकड़ लिया। एक ने जल्दी में चैन खींच दी। दूसरा गाड़ी रुकते ही तुरंत पुलिस को बुला लाया। पुलिस ने आते ही उन दोनों को गिरफ्तार कर लिया।

रेल के यात्री ओजस और उसके साथी की भूरि-भूरि प्रशंसा कर रहे थे। सभी का सामान वापिस मिल चुका था। हार लुट जाने वाली बुढ़िया तो ओजस को बार-बार दुआएँ दे रही थी। तभी एक प्रौढ़ व्यक्ति भीड़ को चीरता हुआ ओजस के पास आया। वह एक दैनिक समाचार-पत्र का संवाददाता था। उसने दोनों किशोरों की फोटो खींची और ओजस का साक्षात्कार लिया। उसने पूछा- 'क्या तुम्हें डर नहीं लगा। यदि तनिक भी निशाना चूक जाता तो क्या होता ?'

ओजस बोला-'होता क्या ? अधिक से अधिक यही न कि वह मुझे मार देता। यदि अच्छे कार्य के लिए प्राण भी चले जाएँ तो क्या हानि है ? प्राणों के भय से अन्यायी, अत्याचारी का प्रतिरोध न करना क्या बुद्धिमानी कही जा सकती है ? हम वहीं परास्त होते हैं, जब प्राणों का अनुचित मोह करके डरपोक बन जाते हैं अन्यथा, क्या ऐसा संभव है कि इतने सारे व्यक्तियों की भीड़ के रहते दो लुटेरे अपने कार्य में सफल हो जाएँ ?'

ओजस की बात सही थी। उसने बड़ों को भी उनकी गलती की ओर संकेत कर दिया था। जो साहस उन्होंने न किया था, वह एक किशोर ने कर दिखाया था।

अगले दिन एक प्रमुख दैनिक समाचार-पत्र ने समस्त घटना का विवरण देते हुए ओजस का चित्र तथा साक्षात्कार प्रकाशित किया। समाजसेवी संस्थाओं ने पुरस्कार प्रदान कर इस साहसी किशोर का सम्मान किया। आत्मविश्वासी की सामयिक सूझबूझ और सक्रियता ही उसे घोर संकट से उबरने का साहस देती है और सफल भी बनाती है। साहसी सामान्य से ऊँचा होता है, इसलिए वह साधारण लोगों का नायक बन उनके लिए संकट से जूझने और कुछ करने की प्रेरणा बन जाता है। प्रत्येक बालक-बालिका इस प्रकार प्रतिभा और कर्मनिष्ठा से देश का गौरव बनें, ऐसी समाज और राष्ट्र की आकांक्षा रहती है। आओ ! हम सब इसे पूरा करने में लगे रहें।

पहेली का उत्तर : चोटी

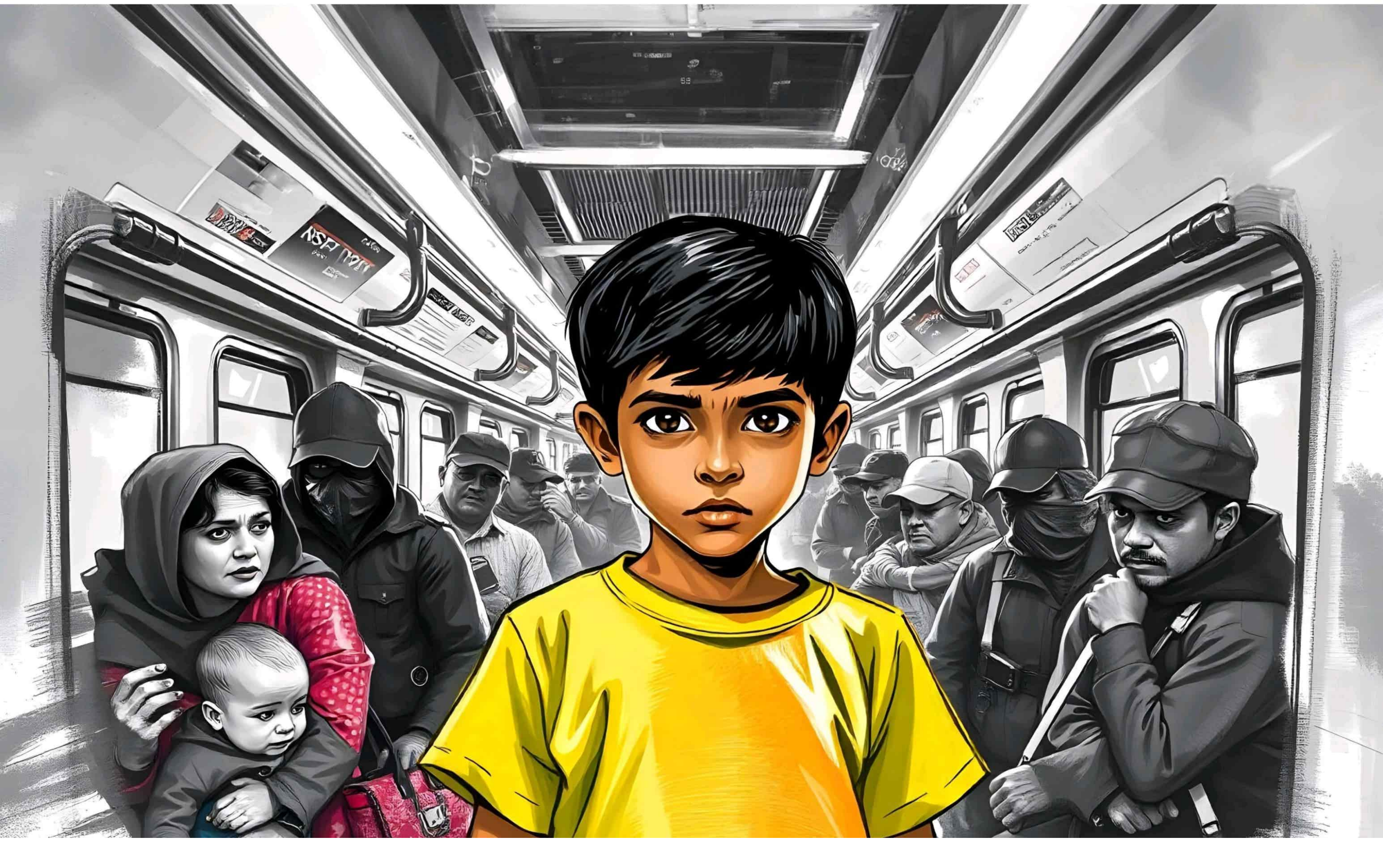

कहानी
सप्तम दिवस

असमं क्षत्रं असमं मनीषा ।

- यजुर्वेद

अतुलित शौर्य और असीम बुद्धि धारण करो । जहाँ अदम्य साहस और दूरदर्शिता है, वहाँ सब कुछ है ।

पहेली ?
बीमारी नहीं है, फिर भी वो खाती है गोली । हर कोई सुनकर डर जाते हैं, ऐसी है इसकी बोली ।

साहस की जीत

शरद आठवीं कक्षा का छात्र था । वह मन लगाकर परिश्रम से पढ़ता । उसकी माँ उसकी पढ़ाई का बहुत ध्यान रखतीं । वे स्वयं प्रतिदिन उसे घर पर भी पढ़ाया करतीं । शरद अपनी कक्षा में सदा प्रथम आता ।

शरद की माँ न केवल उसे पढ़ातीं अपितु उसके हर व्यवहार पर ध्यान देती उसे अच्छी बातें सिखाती, अच्छे विचार देती । शरद भी अपनी माँ को प्रतिदिन अपने संगी-साथियों की हर बात भी बता देता था ।

शरद की कक्षा में नवीन नाम का एक छात्र था । उसका मन पढ़ाई में कम लगता था । उसका मुख्य काम था- शरारत करना ।

इधर-उधर घूमना, स्कूल में पैसे बिगाड़ना । अच्छे लड़के उससे दूर रहते थे । शरद भी नवीन से अधिक संबंध न रखता था । उसकी माँ ने उसे समझा दिया था कि वह नवीन से अधिक बातचीत न किया करे । नवीन जानता था कि शरद के पिता उच्च पद पर हैं । वह धनी परिवार का लड़का है अतएव वह सदा उससे बातें करने की घुलने-मिलने की कोशिश करता, पर शरद का रुख उसके प्रति बड़ा उपेक्षा भरा था ।

तब नवीन शरद से मेलजोल बढ़ाने में सफल न हो पाया तो उसने दूसरा उपाय सोचा । एक दिन शरद का मित्र स्कूल नहीं आया था । उस दिन वह अकेले ही घर लौट रहा था । तभी पीछे से आता हुआ नवीन उससे कहने लगा- 'ओह शरद ! आज मैं भी तुम्हारे साथ ही चलूँगा। मेरे मामाजी उधर ही रहते हैं।' 'जरूर चलो ।' शरद ने कहा । 'कोई रास्ते में साथ चले तो उसे भला आपत्ति भी क्या हो सकती है ।'

सहसा ही चलते-चलते नवीन कुछ सोचते हुए बोला-'अरे ! माँ का बताया हुआ एक जरूरी काम तो भूल गया था । बस एक मिनट लगेगा, मैं अभी आया ।' कहते हुए वह एक गली की ओर मुड़ने लगा । फिर शरद की ओर मुड़कर बोला-'यार ऐसा करो कि तुम भी मेरे साथ ही आ जाओ और वहीं से एक छोटे रास्ते से हम निकल चलेंगे ।'

शरद उस गली से अधिक परिचित न था । 'यहाँ से कौन-सा रास्ता जाता है ?' शरद ने पूछा ।

'आओ दिखाऊँ ।' कहकर नवीन ने आग्रहपूर्वक उसका हाथ पकड़कर खींच लिया । शरद नवीन के पीछे पीछे चलने लगा । जैसे ही वह उस सुनसान गली के मोड़ पर पहुँचा तो लगा कि पीछे से किसी ने उसकी नाक पर कपड़ा रखा है । शरद ने उसे हटाकर पीछे मुड़कर देखना चाहा, पर तभी उसे चक्कर आ गया और वह गिर पड़ा ।

होश आने पर नवीन और उसके साथी ने शरद को उनके अनुसार अपने माता पिता के नाम एक पत्र लिखने का दबाव बनाया और ऐसा न करने पर जान से मरने की धमकी दी । शरद ने उसकी बात मान लेनी ही ठीक समझी । उस व्यक्ति ने शरद की ओर से उसके पिता को पत्र लिखाया कि वह डकैतों के कब्जे में है । यदि वे उसका जीवन चाहते हैं तो निश्चित स्थान पर चुपचाप एक लाख रुपए रख जाएँ । यदि धोखा देने का प्रयास किया गया या पुलिस को सूचना दी गई तो उसे सता सताकर मार दिया जाएगा । एक सप्ताह तक उत्तर मिल जाना चाहिए । फिर लुटेरे ने शरद को धमकाते हुए कहा- अब

तुम सही-सही अपना पता लिख दो । यदि सप्ताह भर के अंदर इसका उत्तर न आया तो तुम्हारी मृत्यु निश्चित है ।'

शरद बोल उठा- नहीं ! मैं मरना नहीं चाहता । मैं सही पता ही लिखूँगा ।' शरद ने लुटेरों के कहने के अनुसार पत्र तो लिख दिया, पर, वह सोचने लगा कि पिताजी इतना पैसा कहाँ से लाएँगे ? इन लुटेरों को मुफ्त का पैसा क्यों मिले ? नहीं, मैं ही यहाँ से छूटने का कोई उपाय सोचूँगा । जीवन होगा तो बच जाऊँगा ।'

शरद ने दूसरे दिन से उन सभी की गतिविधियों को अच्छी प्रकार से देखना आरंभ कर दिया । शरद ऐसे दिखलाता जैसे वह बहुत डरा और सहमा हुआ है । वह उन व्यक्तियों से बड़ी विनम्रता से बात करता, आगे बढ़कर उनका काम करने की कोशिश करता । उसने पाया कि चार व्यक्ति तो अधिकतर बाहर रहते हैं । वे प्रायः सुबह होते ही निकल पड़ते । रात में भी कभी लौटते, कभी नहीं । उस खंडहर में केवल एक व्यक्ति रह जाता था। वही वहाँ की पूरी निगरानी रखता । शरद ने चार-पाँच दिन में ही अपने अच्छे व्यवहार से उस व्यक्ति को अपने विश्वास में ले लिया । वह उसका अधिक से अधिक काम कर दिया करता और उसकी सेवा करता । कुत्तों को भी स्वयं ही खाना डालता । इस प्रकार वे भी उससे हिल गए । एक दिन दोपहर में वह व्यक्ति खा-पीकर लेटा था तो उसको कुछ झपकी लग गई । शरद कई दिनों से इसी मौके की तलाश में था । आज उसे आए हुए छठा दिन था । अब शरद ने अधिक विलंब करना उचित न समझा । उसने कुत्तों को जंजीर से बाँध दिया. फिर बड़े धीमे से उसने सोए हुए व्यक्ति के तकिए के नीचे से दरवाजे की चाबी निकाल ली । धीरे से ताला खोलकर वह दबे पैरों बाहर निकल आया । शरद ने बहुत धीरे से दरवाजा बंद कर दिया । उसने चारों ओर बड़ी चौकन्नी निगाहों से देखा, और फिर बेतहाशा भागने लगा ।

आधा घंटे तक लगातार भागने के बाद शरद को बस्ती का रास्ता दिखलाई दिया, वह उसी ओर बढ़ गया । कुछ देर चलने के बाद शहर में आ गया, उसे सामने से एक नगर बस सेवा आती हुई दिखलाई दी । शरद दौड़कर उसी में चढ़ गया । उसने बस में घुसते ही कंडक्टर से कह दिया कि वह कृपा करके थाने पर उतार दे । वह बड़ी कठिनाई से बदमाशों के चंगुल से छूटकर आया है । इस समय मेरे पास पैसे भी नहीं हैं । यदि आपने मेरी सहायता न की तो बदमाश उसे फिर पकड़कर ले जाएँगे । कंडक्टर को उसकी बात सुनकर दया आ गई । उसने शरद को बस में बैठा लिया और थाने पर छोड़ दिया ।

शरद ने थानेदार को सारी बात बताई। पुलिस भी बच्चों को पकड़ने वाले गिरोह को बहुत दिनों से खोज रही थी। थानेदार ने तुरंत ही अनेक सिपाहियों को हथियार देकर शरद के साथ भेज दिया।

शरद उन्हें रास्ता बतलाता गया। सिपाहियों ने जीप को बदमाशों के अड्डे से बहुत पहले ही झाड़ियों में रोक दिया जिससे उनकी निगाह उन पर न पड़े। अब वे पैदल ही शरद के पीछे-पीछे चले। उन्होंने खंडहर के पास जाकर घेराबंदी कर ली। कुछ ही सिपाही अंदर गए। वहाँ कोई न था। उन्होंने अनुमान लगाया कि संभवतः मोटा व्यक्ति शरद को खोजने गया होगा। सभी छिपकर बैठ गए। आधी रात बीतने पर गिरोह आया। उसने सोचा भी न था कि यहाँ पुलिस घेरा डाले बैठी है। आते ही पुलिस ने उन सबको हथकड़ियाँ पहना दीं।

सभी अपराधियों को थाने पहुँचा दिया गया। वहाँ उनकी पिटाई की गई। पिटाई हो जाने पर उनमें से एक व्यक्ति ने सारा भेद खोल दिया। वह बच्चों को चुराने वाला एक कुख्यात गिरोह था , उनकी निशानदेही पर दूसरे स्थान से कुछ बच्चे भी बरामद किए गए थे। उन्हें लूला-लंगड़ा बनाकर उनसे जबरदस्ती भीख मँगवाई जाती थी।

थानेदार और सभी सिपाहियों ने शरद की बहुत प्रशंसा की। उसे सम्मान सहित घर पहुँचाया गया। शरद के माता-पिता ने उन्हें देखते ही हृदय से लगा लिया। बेटे को सकुशल पाकर उन्हें लगा जैसे उनके प्राण ही लौट आए हों। थानेदार ने जब शरद की बहादुरी और सूझबूझ की सारी बात बताई तो वे खुशी से झूम उठे।

अपराधियों के पूरे समूह को जेल भेज दिया गया। वहाँ उन पर मुकदमा चला और कड़ी सजा दी गई। खोजबीन करने पर पता लगा कि नवीन के पिता भी उस गिरोह से संबंधित थे | नवीन लड़कों को बहला-फुसलाकर ले जाता था और वे बदमाश उन्हें पकड़ लेते थे। पुलिस ने नवीन को भी इस अपराध के लिए कड़ी सजा दी।

बदमाशों के चंगुल से छूटे हुए अपंग बच्चों को उनके माता- पिता के पास भेज दिया गया। सभी ने शरद की बहुत सराहना की। उसके साहस और बुद्धिमानी के कारण अपराधी पकड़े गए थे और अनेक बच्चों की रक्षा हुई थी। ऐसे ही बच्चे देश, समाज और राष्ट्र के होनहार सपूत हैं, जिन्हें देखकर भारत के उज्ज्वल भविष्य की कल्पना निखर जाती है।

पहेली का उत्तर: बंदूक

लोरी लाड़ला

सो जा रे लाड़ले अपनी माता के।
दुनियाँ के सारे ही झंझट भुलाके ।।

तू सबसे प्यारा है तू सबसे न्यारा।
मम्मी की पापा की आँखो का तारा।

तू भी बड़ा हो के इन्हें सुख पहुँचाना।
इनकी सेवाओं का कर्ज़ा चुकाना ।।

साथ-साथ नाम देश का भी अमर करना।
इसका भण्डार ज्ञान-विद्या से भरना ।।

- माया वर्मा

माँग की बहादुरी

है बर्मा की बात, बाँध था बहुत बड़ा वह ।
उस दिन वर्षा भी होती थी बहुत भयावह ।।

होते होते छेद हो गया एक बाँध में ।
पानी बहने लगा-पड़ा मालूम बाद में ।।

वह ऐसे कि वहाँ पर पहुँच गया एक लड़का ।
था छोटा ही किंतु देखकर यह-दिल धड़का ।।

लगा सोचने वह, कि छेद यदि बड़ा हो गया ।
होगी भारी हानि घटेगा दुखद वाक्या ।।

बस्ती में जाता बतलाने-समय नहीं था ।
किया जाय क्या-करने को भी सिर्फ वही था ।।

देखा आव न ताव, चढ़ गया वह दीवार पर ।
और छेद में बैठ गया वह खुद ही घुसकर ।।

हुआ वही जो जल की ठण्डक से होना था ।
वह नीला पड़ गया मनुज था, पर छौना था ।।

हुई देर ढूँढते हुए उसको, सब आये ।
जल के छींटे उसी छेद से उड़ते पाये ।।

देखा जाकर, वहाँ घुसा बैठा था बालक ।
हुआ चेतनाहीन-बचाये था प्रतिपालक ।।

उसे निकाला गया और उपचार कराया ।
छेद बाँध का उपकरणों से गया भराया ।।

नाम 'माँग' था उस अपूर्व त्यागी बालक का ।
देश भक्ति मे तजा मोह निज प्राणों तक का ।।

बर्मा की जनता सम्मान उसे देती है ।
नाम उदाहरण के स्वरूप उसका लेती है ।।

बालक हो या वृद्ध-देश सबसे पहले है ।
जीवन लाखों का उसकी गोद में पले हैं ।।

- माया वर्मा

अभ्यास के बिन्दु

बच्चों में साहस के भाव को कैसे जागृत किया जाए

- साहसी वीरों की कहानियाँ सुनाएं।
- बच्चों के स्वाभिमान को ठोकर मत मारिए।
- बच्चों के व्यक्तित्व का आदर करें।
- देशाटन तथा वीर पुरुषों के संपर्क में लाएं।
- बच्चों को नालायक आदि नकारात्मक शब्द ना कहें।
- बच्चों पर अनुचित आशाओं का बोझ ना डालें।
- बच्चों को प्रोत्साहन दीजिए।
- स्काउटिंग रेड क्रॉस आदि सेवा समितियों के कार्यों में भाग लेने दें।

जन्मना जायते शूद्रः संस्कारात् द्विज उच्यते

अर्थात - मनुष्य जन्म से श्रेष्ठ नहीं होता वह संस्कार से बनता है ।

जिस प्रकार अभ्रक आदि सामान्य पदार्थों का आयुर्वेद शास्त्र के ज्ञाता अनेक बार अग्नि संस्कार करते हैं और उससे मकरध्वज सरीखी बहुमूल्य रसायनें बनाते हैं, उसी प्रकार मनुष्य पर षोडश संस्कारों को सोलह बार प्रयोग करके भारतीय धर्म के अनुयायी को सुसंस्कारी बनाया जाता है । यह विज्ञान अद्भुत है ।

ऋषियों ने मानवीय व्यक्तित्व को परिष्कृत करने का उपाय खोज निकाला था जिसके आधार पर मानवीय मन को एक विशिष्ट वैज्ञानिक पद्धति के आधार पर निर्मल, सन्तुलित एवं सुसंस्कृत बनाया जा सके । इस प्रक्रिया का नाम है-संस्कार पद्धति। समय-समय पर षोडश संस्कारों का प्रयोग उपचार मनुष्य के ऊपर इस प्रकार किया जा सकता है कि उसके मनोविकारों का शमन हो और उन सत्प्रवृत्तियों का विकास हो जिनसे व्यक्तित्व प्रखर बनता है। जीवन में सतत काम आने वाली सत्प्रवृत्तियों का बीजारोपण भी इन संस्कारों के समय ही होता है। यदि किसी बालक के सभी संस्कार ठीक रीति से समुचित वातावरण में किये जायें तो उसका ऐसे सुविकसित व्यक्तित्व से सम्पन्न होना पूर्णतया सम्भव है, जिससे उसका जीवन आनन्दमय, प्रतिभा सम्पन्न, प्रगतिशील एवं सफल बन सके। संस्कार पद्धति को एक प्रकार से मनोविकारों के निराकरण की विज्ञान सम्मत चिकित्सा प्रणाली कहा जा सकता है । उसे व्यक्तित्वों को प्रतिभा सम्पन्न बनाने की सृजनात्मक प्रक्रिया कहा जाये तो कुछ भी अत्युक्ति न होगी ।

बाल्यावस्था में संपन्न किये जाने वाले प्रमुख संस्कार

पुंसवन संस्कार

हृदये पितरौ ज्ञात्वा पूर्ण दायित्वमुत्तमम् ।
जन्मनः सन्ततेः कुर्यात् व्यवस्था स्वागताय च ॥

अर्थात - पिता-माता सन्तति के जन्म के महान् उत्तरदायित्व को हृदय में भली भाँति समझकर सन्तति के स्वागत के लिए व्यवस्था करें ।

गर्भवती को उसके निजी कर्त्तव्यों का तथा सारे परिवार को नई आत्मा के आगमन के लिए स्वागत के उपयुक्त वातावरण बनाने का प्रशिक्षण पुंसवन संस्कार के माध्यम से किया जाना चाहिए। धर्मानुष्ठान का जहाँ गर्भस्थ बालक पर प्रेरणाप्रद प्रभाव पड़ेगा वहाँ परिवार के सभी सदस्य यह अनुभव करेंगे कि एक आत्मा के दिव्य अवतरण की पुण्य बेला में उन्हें अपने-अपने कर्त्तव्यों की तैयारी में क्या-क्या करना है। बालक का उचित प्रशिक्षण एवं निर्माण गर्भावस्था से ही हो जाना चाहिए। यह कैसे किया जाय ? उसको विस्तारपूर्वक समझाने का प्रयोजन पुंसवन संस्कार से पूरा होगा। व्यक्ति-निर्माण का कार्य यहीं से आरम्भ होता है।

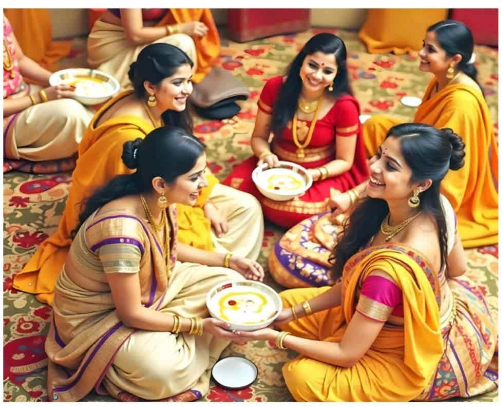

नामकरण संस्कार

कन्या सुपुत्रयोस्तुल्यं वात्सल्यं च भवेत्सदा ।
तुल्यानन्दं विजानीयाद् द्वयोर्मनसि प्राप्तयोः ।।

अर्थात - सदैव कन्या और पुत्र दोनों पर समान वात्सल्य हो दोनों की प्राप्ति से हृदय में समान प्रसन्नता का अनुभव करे ।।

बालक तो अनेक योनियों में भ्रमण करता हुआ, मानव शरीर में आया है, इसलिए उसके मन पर पाशविक संस्कारों की छाया रहनी स्वाभाविक है। इसको हटाया जाना आवश्यक है। यदि पशु-प्रवृत्ति ही बनी रही तो मनुष्य शरीर की विशेषता ही क्या रही ? जिसके अन्तःकरण में मानवीय आदर्शों के प्रति निष्ठा, भावना है उसी को सच्चे अर्थों में मनुष्य कहा जा सकता है।

नामकरण संस्कार के अवसर पर बालक के शारीरिक पालन-पोषण की नहीं मानसिक विकास की विधि-व्यवस्था भी समझाई जाती है, ताकि माता-पिता ही नहीं, परिवार के भी सदस्य इस नवीन आगन्तुक को सुसंकृत बनाने में अपनी-अपनी जिम्मेदारियाँ समझें और उनका पालन करें।

व्यक्ति के नाम का उसके जीवन पर बड़ा प्रभाव पड़ता है। नाम ऐसा रखना चाहिए, जो बालक को प्रोत्साहित करने वाला एवं गौरव अनुभव करने वाला हो।

अन्नप्राशन संस्कार

अन्नस्य सूक्ष्मभागेन विकासो मनसा भवेत् ।
अतोन्यायादर्जनंकुर्याच्चामलंसत्क्रियादिभिः।।

अर्थात - अन्न के सूक्ष्म भाग से ही मन का विकास होता है। अतः उसे न्यायपूर्वक अर्जन करें और सात्विक क्रिया एवं पवित्र भाव से उसे स्वच्छ और निर्मल करें।

अन्नप्राशन के समय बच्चा तो छोटा होता है, पर परिवार के वयोवृद्ध सदस्यों को यह सिखाया जाता है कि बालक की स्वास्थ्य रक्षा के लिए किस प्रकार कितना और क्या भोजन कराया जाय तथा मानसिक स्वस्थता की दृष्टि से वह अन्न कितना सात्विक एवं संस्कारिक हो। अन्न से शरीर ही नहीं मन भी बनता है, इसलिए बच्चे को शरीर एवं मन की दृष्टि से समर्थ बनाने के लिए उसके आहार पर पूरा ध्यान देना होता है। उसी सतर्कता की शिक्षा अन्नप्राशन के समय दी जाती है और उपस्थित लोगों को यह बताया जाता है कि वे स्वयं भी अपना आहार किस तरह रखें, जिससे शरीर और मन से स्वस्थ रहने के अतिरिक्त राष्ट्रीय खाद्य संकट में अपना ठीक योगदान कर सकें।

चूड़ाकर्म-मुण्डन संस्कार

मस्तिष्कं नास्ति सम्पत्तिर्व्यक्तेरेवात्र कस्यचित् ।
अपि त्वेतद्धि विश्वस्य, कुर्याद्यत्नं तदुन्नतेः ॥

अर्थात - मस्तिष्क इस संसार में किसी की व्यक्तिगत सम्पत्ति नहीं है, अपितु यह विश्व की सम्पत्ति है। अतः इसे श्रेष्ठतम बनाने का प्रयत्न करना चाहिए।

चूड़ाकर्म-मुण्डन का अर्थ है-मस्तिष्क को संस्कारवान् बनाने की आवश्यकता पर ध्यान देना। बालक छोटी आयु में ही बहुत कुछ सीख लेता है। कर्म, स्वभाव का तीन चौथाई निर्माण छोटी-सी आयु में हो जाता है। चूड़ाकर्म के समय बाल उतारना ही पर्याप्त नहीं वरन् यह सीखना भी आवश्यक है कि बालक पर वे संस्कार इन दिनों किस प्रकार डाले जायें, जिनके आधार पर वह भावी जीवन में महापुरुषों एवं नर-रत्नों की भूमिका प्रस्तुत कर सके।

पुरातनकाल से ही ऋषियों की यह मान्यता है कि मनुष्य न जाने कितनी योनियों में भटकता हुआ पाशविक संस्कार-विचार-मनोभाव धारण करता हुआ मानव योनि को प्राप्त होता है। इन अनुपयुक्त अवांछनीय संस्कारों का निष्कासन बालक को सही मानसिक विकास हेतु अनिवार्य है। नरपशु-नरकीटक से नर-मानव, देवमानव 'में परावर्तन हेतु यह प्रतीक संस्कार सम्पन्न किया जाता है। मुण्डन सदैव किसी तीर्थ स्थान या देवस्थल पर किया जाता है। ताकि सिर से उतारे गये बालों के साथ निकले कुसंस्कारों का तीर्थ चेतना द्वारा शमन हो सके तथा सुसंस्कारों की स्थापना हो सके।

विद्यारम्भ संस्कार

व्यक्तित्वे विनयत्वेन पात्रता वर्द्धनेन च ।
प्राप्यन्ते निश्चयेनेह धनधर्मसुखानि वै ॥

अर्थात - व्यक्तित्व में विनयभाव और पात्रता की बुद्धि से निश्चय इस लोक में धन, धर्म और सुखों की प्राप्ति होती है ।

विद्यारम्भ व साक्षरता का श्रीगणेश मनुष्य जीवन की सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण आवश्यकता है। बच्चे को पढ़ाना आरम्भ करते हुए परिवार के सदस्यों को शिक्षा का उद्देश्य एवं स्वरूप भी निर्धारित कर लेना होता है और यह अनुभव करना होता है कि जितनी शिक्षा स्कूल में पायी जाती है, उतनी ही उसे घर पर भी मिलती रहे। भाषा, गणित, भूगोल आदि स्कूल में पढ़ाये जाते हैं, तो गुण, कर्म, स्वभाव की विद्या परिवार के वातावरण में मिलती है। इस उभय पक्षीय प्रशिक्षण में परिवार के लोग अपनी भूमिका किस प्रकार प्रस्तुत करें, यह शिक्षा विद्यारम्भ संस्कार के समय सारे परिवार को मिलती है। इस प्रकार व्यक्ति के जीवन में शिक्षा के साथ विद्या का समन्वय हो जाता है ।

" बच्चे अपने माता-पिता के संस्कारों और शिक्षाओं के आईने होते हैं । शिक्षा वह है जो आत्मा की पूर्णता को प्रकट करे । "

— स्वामी विवेकानंद

अखिल विश्व गायत्री परिवार
शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार
हमारे रचनात्मक अभियानों व
कार्यक्रमों हेतु संपर्क करें
youth.awgp.org
FOR ACTIVITIES OF YOUTHCELL
9258360962
9258360652
युवा प्रकोष्ठ, शान्तिकुञ्ज-हरिद्वार
VP 86